जागृति

जागृति श्रृंखला–सत्यनिष्ठा – भाग 3

डॉ. डेविड प्लॉट

हे परमेश्वर, हम स्वीकार करते हैं कि तू पवित्र है और तू पूज्य है। हम प्रार्थना करते हैं कि हम सामूहिक आराधना में जो करें वह विनम्रतापूर्वक मुझे केन्द्र में रखकर ही हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हम तेरे वचन को पढ़ें तो तू अपनी महिमा प्रकट कर और हमारे मन में अपना आत्मा और अपना मन बसा दे और हमें मसीह के स्वरूप में अधिकाधिक बदल दे कि हम तेरी आराधना करनेवाले हों। यीशु के नाम में हम प्राथना करते हैं, आमीन!

आइए हम अपनी–अपनी बाइबल में यूहन्ना अध्याय 4 खोल लें।

हमारी पिछली रात्री सभा में कुछ लोग बाहर से आए थे, थके मांदे परन्तु वे वहां आए अवश्य थे। रात्री सभा में जितना अधिक समय होता जाता है जागते रहना उतना ही अधिक कठिन होता जाता है।

इससे मुझे अपने सेमिनरी के दिनों का स्मरण होता है। मेरे विचार में हम में से अनेक जन ऐसी परिस्थिति से गुज़र चुके हैं, आराधना में या स्कूल में जब आपको जागते रहने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा हो।

मुझे स्मरण है; मेरी एक बहुत रूचिकर कक्षा थी। मेरे प्राध्यापक एक विख्यात व्यक्ति थे और उनकी कक्षा में मुझे जागने के लिए अत्यधिक संघर्ष करना पड़ रहा था और एक समय ऐसा आया कि मैं हार गया और मुझे झपकी आ ही गई।

ऐसी स्थिति में आप क्या करते हैं कि अपना चेहरा छिपाते हैं कि प्राध्यापक आपको सोते हुए पकड़ न पाए।

अब ऐसी स्थिति में हल्की सी भी आवाज़ आपको झटका दे दती है और यदि आप आराधना में बैठे हैं तो आस–पास बैठे लोग भी आपके साथ चौंक जाते हैं।

मेरे साथ उस कक्षा में क्या हुआ। वह कोई आवाज़ नहीं थी जिससे मेरी नींद टूटी। मेरे ही खर्राटे से मेरी नींद टूटी।

मैं आपके बारे में तो नहीं जानता परन्तु मुझे ऐसा दृश्य देखना अच्छा लगता है और मुझे पूरा विश्वास है कि उस दिन कोई न कोई मुझे देख रहा था कि मैं जागने के लिए संघर्षरत हूं और अन्त में मैं सो ही गया।

यह अति विचित्र बात है कि आप कहीं उपस्थित तो हैं परन्तु वास्तव में वहां से बहुत दूर कहीं और हैं। आपके विचार में क्या यह सामूहिक आराधना में भी संभव नहीं? आप मानेंगे कि यह संभव है कि हम सामूहिक आराधना में उपस्थित हों परन्तु हमारा मन कहीं और हो।

इस अध्ययन में मैं सामूहिक आराधना में समझौता रहित निष्ठा के विषय विचार प्रस्तुत करुंगा। हमारे लिए यहां परमेश्वर का वचन है जो हमारी उस प्रवृति के विषय में है कि हम आराधना में उपस्थित तो होते हैं परन्तु परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा निभा नहीं पाते। यह एक अत्यधिक चतुर मानसिकता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि मनुष्य आजीवन हर एक आराधना में उपस्थित होता रहे परन्तु मसीह यीशु के साथ अर्थपूर्ण संबन्ध न बना सके। आप मानेंगे कि यह अति संभव है। यह घातक भी है। अतः आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि सत्यनिष्ठा हमारी सामूहिक आराधना का एक भाग हो।

मैं आपको यह बात एक कहानी द्वारा समझाना चाहता हूं जिसे हम आत्मिक स्वांग कहेंगे। हम आत्मिक स्वांग के कुछ गुण भी देखेंगे–हम इसके चार गुण देखेंगे। अब आप चाहे संपूर्ण जीवन आराधनाओं में जाते रहे हैं या आज पहली बार उपस्थित हुए हों। आप चाहे अगुवे हों या प्राचीन हों या कार्यकर्ता हों मैं आपमें से प्रत्येक को चुनौती देना चाहता हूं कि आप देखें कि आराधना करते समय क्या आपमें इन गुणों मे से कोई गुण हैं जो परमेश्वर के साथ संबन्धों में आपका व्यवहार है?

हम सामरिया के एक नगर, सुखार के बाहर यीशु और एक सामरी स्त्री का वार्तालाप देखेंगे। वहां याकूब का कुआं था। यीशु वहां बैठ गया तभी एक स्त्री कुंए पर पानी भरने आई। यह स्त्री पांच पति कर चुकी थी और जिसके साथ वह वर्तमान में रहती थी वह भी उसका वैधानिक पति नहीं था। उसका उस समाज से कोई संबन्ध नहीं था। अतः वह अकेली ऐसे समय पानी भरने आई जब कुंए पर कोई न हो। वह एक विश्वासी स्त्री थी परन्तु उसका विश्वास खोखला था।

मैं चाहता हूं कि आप उस स्त्री के स्थान में अपने आप को रखकर देखें क्योंकि यीशु उससे चर्चा करते हुए उसे आराधना में सत्यनिष्ठा सिखा रहा था। तो आइए हम यूहन्ना 4:13 देखें, वार्तालाप के मध्य यीशु ने उससे कहा,

यूहन्ना 4:13–26 "यीशु ने उसको उत्तर दिया, "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा, परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।" स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।" यीशु ने उससे कहा, "जा, अपने पति को यहाँ ला।" स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं बिना पति की हूँ।" यीशु ने उससे कहा, "तू ठीक कहती है। 'मैं बिना पति की हूँ।' क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं। यह तू ने सच ही कहा है।" स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है।" यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में। तुम जिसे नहीं जानते, उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" यीशु ने उस से कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।"
आत्मिक ढोंगियों के चार लक्षणः

आत्मिक ढोंगी परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा से रहित आराधना करते हैं।

इस अध्याय के आरंभ में हम देखते हैं कि यीशु और उस स्त्री के मध्य पानी के विषय चर्चा हो रही है क्योंकि वह पानी भरने आई थी। यीशु उसी संदर्भ में कहता है कि वह जल दे सकता है। वह हमारी आत्मा की प्यास बुझाता है जो अन्य कोई नहीं कर सकता। पद 16 तक यही वार्तालाप चलता है तब अकस्मात ही विषय में परिवर्तन आता है।

यीशु उससे कहता है, "जाकर अपने पति को ले आ।" यीशु उसकी कोमल भावना को स्पर्श करता है। उत्तर में वह कहती है, "मेरा पति नहीं है।" वह बचने का प्रयास करती है।

परन्तु यीशु ने उससे कहा, "तू ठीक कहती है कि तेरा पति नहीं क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है और जिसके साथ तू अभी रह रही है, वह भी तेरा पति नहीं है।" यीशु व्यर्थ की बात करने की अपेक्षा सीधा मुख्य विषय पर आता है।

अब वह वही करती है जो हम में से अधिकांश जन करते हैं। वह विषय बदल देती है। अब यह तो मेरे पतियों के विषय चर्चा करने लगा है। अच्छा होगा कि मैं मतभेद का विषय छेड़ दूं। अच्छा, यह बता कि आराधना करना कहां उचित है, तुम्हारे पर्वत पर या हमारे इस पर्वत पर? वह यीशु के साथ चतुराई दिखा रही है। वह सत्यनिष्ठा से हट रही है।

अब यदि हम अपने अतीत में परमेश्वर के साथ अपने संबन्धों को देखें जो पाप में लिप्त थे तो धर्मशास्त्र की यह बात नई नहीं है। मेरे साथ पुराने नियम मे उत्पत्ति अध्याय 3 देखें। हम में से अधिकांश जन आदम की कहानी से परिचित हैं– मनुष्य का पतन! पाप का संसार में आगमन।

उत्पत्ति अध्याय 3 पद 6: आदम और हव्वा शैतान के प्रलोभन में पड़ गए और उन्होंने पाप किया। पद 6 में लिख है, "अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, "तू कहाँ है?" उसने कहा, "मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।" उसने कहा, "किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है?" आदम ने कहा, "जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।" तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "तू ने यह क्या किया है?" स्त्री ने कहा, "सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैं ने खाया।"

आप यहां देख सकते हैं कि बात कैसे बदली जाती है। वे परमेश्वर से छिप रहे थे और जब पकड़े गए तो दूसरे पर दोष डालने लगे, "स्त्री का दोष, सर्प का दोष।" अपनी चूक को परमेश्वर के समक्ष स्वीकारने में चतुराई का प्रदर्शन! यह तो थी पुराने नियम की प्रथम पुस्तक। अब अन्तिम पुस्तक, मलाकी में देखें। अध्याय 1 में परमेश्वर अपनी प्रजा को आराधना के संबन्ध में चिता रहा है। उस युग में आराधना का अर्थ था, मन्दिर में बलिदान चढ़ाना। बलिदान के लिए निश्चित नियम थे। उन्हें सर्वोत्तम वस्तु निर्दोष एवं निष्कलंक बलि चढ़ानी होती थी।

इस अध्याय से प्रकट है कि याजक नियम पालन में सत्यनिष्ठ नहीं थे। दखिए, मलाकी अध्याय 6 पद 1, में परमेश्वर की क्या शिकायत है, "पुत्र पिता का और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूं, तो मेरा आदर कहां है? यदि मैं स्वामी हूं, तो मेरा भय मानना कहां? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकों से भी जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है।"

उनका साहस देखिए! वे यहोवा से पूछते हैं, "हमने किस बात में तेरा अपमान किया है?" "तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो। तौभी तुम पूछते हो, 'हमने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है?'"

वे परमेश्वर की आंखों में आंखे डालकर उससे प्रश्न करने का साहस करते हैं।

क्या परमेश्वर की वेदी को अस्वीकार्य बलि द्वारा अशुद्ध करना गलत नहीं? लंगड़े या रोगी पशु लाना क्या बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ, क्या वह तुम से प्रसन्न होगा या तुम पर अनुग्रह करेगा? फिर तुम परमेश्वर से अनुग्रह की आशा कैसे रखते हो? भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग जला न पाते। क्या आप विषयवस्तु समझ रहे हैं?

वे खुल्लमखुल्ला धोखा कर रहे थे और फिर साहसपूर्वक पूछते थे कि उनकी गलती क्या है। तुम्हारी अनिष्ठा के कारण पाप बढ़े, इससे तो अच्छा यह है कि मन्दिर को बन्द कर दिया जाए।

यद्यपि आज की आराधना इस्राएल से भिन्न है परन्तु विषयवस्तु वही है– आराधना में सत्यनिष्ठा। अध्याय 2 पद 3 देखिए वह याजकों से क्या कहता है, "मैं तुम्हारे कारण बीज को झिड़कूंगा और तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे यज्ञपशुओं का मल फैलाऊंगा और उसके संग तुम भी उठाकर फेंक दिए जाओगे।" परमेश्वर सामूहिक आराधना में सत्यनिष्ठा को अत्यधिक गंभीर मानता है।

यही कारण है कि यूहन्ना 4 में यीशु उस सामरी स्त्री के जीवन में पाप के विषय को सीधा स्पर्श कर रहा है। हम सोचेंगे, "क्या यह यीशु की कठोरता नहीं? यीशु उसके घाव कुरेद रहा है। पुराने नियम का परमेश्वर तो ऐसा कर सकता है परन्तु यीशु?"

यीशु क्यों उसके पाप उजागर कर रहा था क्यों उसके दुःख उभार रहा था? मेरे विचार में इसके दो मुख्य कारण हैं:

पहला, यीशु हमारे पापों को हमारे सामने ही नहीं लाता है, वह उन्हें ढांकना चाहता है। यीशु हमारे पाप ढांकना चाहता है। यूहन्ना 4 का सौंदर्य ही संपूर्ण धर्मशास्त्र में प्रकट है। हम सब में पाप है और उसे हम ढांके या परमेश्वर, यह हमारा चुनाव है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह यीशु के रूप में आया और कहा, "मैं तुम्हारे पाप उजागर करना चाहता हूं कि मैं अपने अनुग्रह द्वारा उन्हें ढांप दूं।"

एक बात हमेशा याद रखें, हम पाप को अनुग्रह से ढंका नहीं पाएंगे जब तक कि वह उजागर न किया जाए। यही कारण था कि उस सामरी स्त्री को मसीह के समक्ष सत्यनिष्ठ होना आवश्यक था क्योंकि वह उसके पाप ढांकना चाहता था। इस सच्चाई से कभी न चूकें, कि परमेश्वर सबसे बड़े पापी को भी मसीह की धार्मिकता द्वारा ढांक देना चाहता है– उसके क्रूस पर बहाए लहू के द्वारा। यह उसका आनन्द है।

परन्तु वह ठट्ठों मे नहीं उड़ाया जा सकता। वह हमारे निष्ठा से रहित स्तुतिगान और धार्मिक कार्यों द्वारा अपना अपमान करवाने के लिए उन्हें स्वीकार नहीं करेगा। यदि हम आराधना में बैठकर सोचें कि हम में पाप नहीं या पाप है तो उसे महत्त्वहीन समझें या सोचें कि वह वास्तव में पाप नहीं है तो हम सामूहिक आराधना के उद्देश्य से चूक जाते हैं।

कर्नेलियस प्लांटिंगा पाप की गंभीरता और उसे अनदेखा करने के बारे में कहते हैं– यह मेरे मनपसन्द उदहारणों में से एक है, "कलीसिया की आधुनिक प्रचलित विधियों में पाप की घातक सत्यता को अनदेखा करना या उसे शिष्ट बनाना या उसे शिथिलता प्रदान करना सुसमाचार को प्रभावहीन बनाना है। अतः सत्य तो यह है कि पाप के पूर्ण अनावरण के बिना अनुग्रह का सुसमाचार अप्रासंगिक, अनावश्यक और अन्ततः अरूचिकर हो जाता है।"

अतः हम निश्चय ही समझ लें कि यदि हम आराधना में उपस्थित हों और पाप तथा दण्ड पर विचार न करें और यह सोचें कि सब ठीक है और हमारे जीवन में पाप नहीं है तो हम खुशी–खुशी बाहर जा सकते हैं परन्तु हम उस सुसमाचार के सामर्थ्य को समाप्त कर देंगे जो हमें परस्पर मेल कराता है।

जब हम परमेश्वर के समक्ष अपने पाप की सच्चाई में आते हैं और परमेश्वर से कहते हैं, "हे प्रभु, मैं इन बातों से संघर्षरत हूं। मैं इन्हें संभाल नहीं पर रहा हूं। मैं इन पर जय नहीं पा सकता।" तब परमेश्वर अपना अनुग्रह पकट करने में और पाप ढांकने तथा हमें जय पाने का सामर्थ्य प्रदान करने में अति प्रसन्न होता है।

पाप को छिपाकर हम वहां नहीं आ सकते हैं। परमेश्वर हमारे पाप को ढांकना चाहता है। अतः सामूहिक आराधना में ऐसा करना आवश्यक है। हम जानते हैं कि आराधना के समय मसीही जीवन में पाप को छिपाए रखना और सोचना कि वह है ही नहीं, अति संभव है।

परमेश्वर हमें इससे मुक्ति दिलाए। उसकी इच्छा हमारे पाप ढांकने की ही नहीं है परन्तु हमें दुःखों में शान्ति प्रदान करने की भी है।

यहां अध्याय 4 में जो वार्तालाप है वह आप मनुष्यों में प्रायः सुनते नहीं हैं परन्तु इस विषय में सोचें। प्रभु यीशु ने उस स्त्री का पाप उजागर किया केवल इसलिए नहीं कि उसे पाप की क्षमा का बोध हो परन्तु इसलिए कि वह पाप के कारण बहुत दुःखी थी और एक के बाद एक पुरुषों में संतोष खोज रही थी परन्तु सब व्यर्थ था और यीशु चाहता था कि उसे यह भी बोध हो कि उसे केवल यीशु में संतोष प्राप्त होगा। वह चाहता था कि उसे यह समझ में आ जाए। अतः वह उसका पाप सामने लाता है।

अपनी आराधनाओं में हम इससे चूक जाते हैं। मैं अनेक आराधनाओं में गया हूं जहां आराधना का अगुआ या प्रचारक कहता है, "हम आराधना में आए हैं इसलिए हम हर एक विचार को त्याग कर आराधना में ध्यान लगाएं।" सामूहिक आराधना में ऐसा कहना कैसी विचित्र बात है!

सामूहिक आराधना का उद्देश्य यह नहीं कि अपने जीवन की सच्चाई और दुःखों को बाहर छोड़ दें कि पवित्र स्थान में प्रवेश कर पाएं। सामूहिक आराधना का उद्देश्य है कि जीवन के सब दुःख–दर्द लेकर आराधकों के परिवार में उपस्थित हो और उन्हें परमेश्वर के समक्ष रख दें क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है कि सब समस्याओं से हमारा उद्धार करे।

वह चाहता है कि हम अपने संघर्षों के बारे में उसके साथ सत्यनिष्ठ बनें। हम जानते हैं कि मसीही समुदाय में यह एक परीक्षा है कि आराधनाओं में नियमित रूप से उपस्थित होते रहें और अपने मन को समझाएं कि सब बहुत अच्छा चल रहा है और दिखाएं कि सब अति उत्तम है।

परमेश्वर चाहता है कि हम अपने संघर्षों में उसके समक्ष सत्यनिष्ठ बनें और उन्हें उसके चरणों में डाल दें और जान लें कि जब हम अपनी चिन्ताएं उसके ऊपर डाल देते हैं तब वह क्या करता है। वह हमारी सुधि लेता है। वह हमारे संघर्ष संभाल लेने में सर्वशक्तिमान है। अतः सामूहिक आराधना में सब कुछ उसके पास ले आएं।

प्रभु यीशु उस स्त्री की आत्मा को संतोष प्रदान करना चाहता था और सच तो यह है कि वह प्रत्येक प्राणी को संतोष प्रदान करना चाहता है चाहे आज आपके जीवन में कैसा भी संघर्ष क्यों न हो। परन्तु आत्मिक ढोंगी सत्यनिष्ठा से रहित परमेश्वर की आराधना करना चाहते हैं।

दूसराः आत्मिक ढोंगी आराधना को स्थान के साथ सीमित करते हैं। देखिए वह स्त्री विषय बदलकर कहती है, कि उनके पूर्वज उस पर्वत पर आराधना करते थे परन्तु यहूदियों का कहना था कि आराधना का स्थान केवल यरूशलेम है।

यहां मैं आपको यहूदियों और सामरियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि समझाना चाहता हूं। यहूदियों और सामरियों में परस्पर विरोध था और उसके उपरान्त यीशु का एक स्त्री से खुलकर बातें करना सब सीमाओं को पार कर गया था। उस युग में पुरुष और विशेष करके यहूदी या सामरी, स्त्रियों से ऐसी बातें नहीं करते थे वरन् सब के सामने तो वे स्त्रियों से बात भी नहीं करते थे।

मैं आपको व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 से पढ़कर सुनाता हूं, पद 5, "जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा कि वहां अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवासस्थान के पास जाया करना।" परमेश्वर ने उनसे कहा था कि वह अपने लोगों के मध्य एक स्थान में वास करेगा और वह मन्दिर था।

सामरी केवल मूसा रचित पांच पुस्तकों में विश्वास रखते थे– उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण। अब यहूदियों पर परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रकट किया कि उसका निवासस्थान

दाऊद पुत्र सुलैमान बनवाएगा–यरूशलेम का मन्दिर, और उसने यरूशलेम में मन्दिर बनवाया जहां प्रत्येक यहूदी आराधना के लिए जाता था।

अब क्योंकि सामरी व्यवस्थाविवरण तक ही रूक गए आगे नहीं बढ़े इसलिए उन्होंने अब्राहम के प्रथम बलिदान का स्थान चुना जो शकेम कहलाता है और गिरिज्जीम पर्वत की छांव में है। उन्होंने कहा कि यही स्थान पुरखाओं का आराधना स्थल है। अतः हम यहीं आराधना करेंगे।

इस प्रकार यहां से यहूदियों और सामरियों में विभाजन हो गया। यहूदी कहते थे, "आराधना यरूशलेम में होना है।" और सामरी कहते थे, "आराधना गिरीज्जीम पर्वत पर होना है।"

अतः उस स्त्री ने यीशु से पूछा, "तेरे विचार में आराधना कहां करना चाहिए?" मैं चाहता हूं कि आप यहां उस प्रवृति को देखें जो आराधना को बाहरी परिस्थितियों पर आधारित करके अनुचित बनाती है। आराधना कहां करना चाहिए, यरूशलेम में या गिरिज्जीम पर्वत पर? हम आराधना को बाहरी परिस्थितियों पर आधारित करते हैं।

आज हमारा वाद–विवाद का विषय यरूशलेम या गिरिज्जीम पर्वत नहीं है परन्तु सामूहिक आराधना के विषय आपका विचार कैसे स्थान का होता है? एक हॉल, संगीत, संगीतवाद्य, मंच आदि बाहरी बातें और वर्षों से चले आ रहे इस विवाद का संबन्ध आराधना से है। आराधना के लिए सबसे अच्छा स्थान कौन सा होगा? अतः हम लाखों रूपयों का आराधनालय बनवाते हैं। आराधना विधि? आदि अनेक विवाद हैं। परन्तु सत्य तो यह है कि नये नियम की आराधना सर्वथा भिन्न थी। वहां इन सब बातों का कोई महत्त्व नहीं था।

अन्त में, बाहरी दिखावा आवश्यक नहीं है। हम देखते हैं कि यीशु आराधना के अन्तरात्मा से जोड़ता है, और कहता है, "तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में।" आराधना बाहरी दिखावा नहीं है। यह आन्तरिक स्थिति है, मन की स्थिति है।

यीशु ने ऐसा क्यों कहा? यूहन्ना अध्याय 2 देखें कि इस वार्तालाप से पूर्व वहां क्या हुआ था।

यूहन्ना 2:13, "यहूदियों का फसह का पर्ब्ब निकट था, और यीशु यरूशलेम को गया। और उस ने मन्दिर में बैल, भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया। तब उसने रस्सियों का कोड़ा बनाकर,

सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिखेर दिये और पीढ़ों को उलट दिया, और कबूतर बेचनेवालों से कहा, 'इन्हें यहां से ले जाओ। मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।'"

उसके शिष्यों को भविष्यद्वाणी का वचन स्मरण आया, "तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी।" इस पर यहूदी धर्मगुरु रुष्ठ हुए और यीशु से पूछा, "तू हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है।" यीशु ने कहा, "इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" यहूदियों ने कहा, "इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं। और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?"

वे तो यीशु की बात नहीं समझे परन्तु यूहन्ना हमें समझाता है, "उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था।" जब वह मुर्दों में से जी उठा तब उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था, और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की। यूहन्ना रचित सुसमाचार में मसीह के परिचय का यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भाग है क्योंकि यीशु आराधना में आमूल परिवर्तन ला रहा है। वह बाहरी दिखावे का पासा पलट रहा है।

वह कहता है, "तुम्हारा आराधना स्थल मैं हूं, यह पर्वत नहीं।" अतः यीशु ने पर्वत गिरिज्जीम या यरूशलेम पर विवाद करना नहीं चाहा। "कुछ ही दिनों में मैं क्रूस पर संसार के पापों के लिए अपनी जान दूंगा और पुनः जी उठूंगा। तब आराधना का केन्द्र मैं होऊंगा।"

अतः स्पष्ट है कि आराधना बाहरी बातों पर नहीं आन्तरिक अवस्था पर निर्भर करती है जिसमें यीशु की उपस्थिति सर्वप्रथम है। मसीह की उपस्थिति ही हमारा आराधना स्थल है। अतः बाहरी दिखावा बुरा तो नहीं परन्तु आवश्यक है, हम यहां चूकते हैं। हम पुराने नियम की यहूदी आराधना के स्वरूप बाहरी स्थान की खोज करते हैं और मसीह यीशु को आन्तरिक स्थान में खोजना भूल जाते हैं।

अब मैं आराधना स्थल के बारे में कुछ कहते हुए सावधान रहना चाहता हूं क्योंकि मन्दिर की चर्चा के ही कारण यीशु और स्तिफनुस मारे गए थे। परन्तु आप मेरी बात समझें। यदि हम इन बाहरी बातों पर निर्भर करके आराधना में आते हैं कि आराधना करें और वे यदि मनमोहक और प्रभावी हों तो हम आराधना के बाद सोचते हैं, "बहुत अच्छी आराधना थी।" हमें ऐसा लगता है कि हमने आराधना की और यदि संगीत एवं

उपदेश हमारी मनोत्तेजना के योग्य नहीं रहे तो हम निराश होकर सोचते हैं, "आज आराधना करने में मन प्रसन्न नहीं था।"

अब आप समझें कि बाहरी बातें आराधना पर कैसे प्रभाव डालती है? अब यदि यही क्रम सप्ताह–प्रति–सप्ताह चलता रहे तो आप सोचने लगते हैं कि आपको आराधना के लिए कोई अन्य स्थान खोजना चाहिए। वहां भी यही हाल होगा और आप फिर कोई और स्थान की खोज करेंगे, "मैं यहां भी आराधना नहीं कर पा रहा हूं।"

परमेश्वर दया करे! यह कैसी बाइबल विरोधी बात है कि कहें, "मैं उस वातावरण मे आराधना नहीं कर सकता।" यह आराधना के उद्देश्य से चूकना है। परमेश्वर दया करे! हमारे भाइ–बहन जो विश्व में कैदी हैं आराधना में एक मन हैं। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम बाहरी दिखावे की अपेक्षा अपने–अपने आराधनालयों में एक मन आराधना करें।

समस्या तो यह है कि यदि हम बाहरी बातों पर निर्भर करते हैं और वे हमें जोश दिलाने में असफल रहती हैं तो हमें परमेश्वर की उपस्थिति की कमी का बोध होने लगता है और हम परमेश्वर की उपस्थिति के विषय संशयी हो जाते हैं। हम सोचने लगते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ नहीं है। इससे परमेश्वर के लिए हमारा दृष्टिकोण और उसके साथ हमारा व्यक्तिगत संबन्ध प्रभावित होता है।

सत्य तो यह है कि हमें आराधना में जो चाहिए वह है प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति। वह आराधना का मुख्य आधार है। यदि आपके पास यीशु है तो चाहे आप बन्दीगृह में हों, चाहे आप आराधनालय में हों, चाहे आप घर में हों, संसार के किसी भी कोने में हों आपकी आराधना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपको आराधना में जो चाहिए वह है यीशु की उपस्थिति।

हमें इस पर विशेष ध्यान देना है, विशेष करके जब हम वैश्विक मिशन का भाग होना चाहते हैं। हमें यीशु की महिमा और उसकी आराधना के निमित्त सब जातियों में पहुंचने के लिए संसार में आराधनालय बनवाने की आवश्यकता नहीं है। क्या हमारे पास इतना धन होगा? कदापि नहीं। परमेश्वर की आराधना द्वारा संसार पर प्रभाव डालने की युक्ति कैसी घृणित है!

हम तो ऐसा नहीं करेंगे। हम छोटे–छोटे समूह बनाकर संसार में मसीह यीशु की उपस्थिति को लेकर जाएंगे और वे उसकी उपस्थिति के चारों ओर एकत्र होंगे–गुप्त रूप से रात में, घरों में छोटे समूह स्वरूप या किसी ईमारात में! कहीं भी, कैसे भी, इसका कोई अन्तर नहीं पड़ेगा क्योंकि वे मसीह के चारों ओर एकत्र होंगे। हमें इसी बात का ध्यान रखना है।

उसकी उपस्थिति ही नहीं, दूसरी बात, हमारे मन की प्रतिक्रिया–हमारे मनोभाव! यीशु उस स्त्री से कहता है कि परमेश्वर आत्मा है और हमें उसकी आराधना आत्मा में करना है। यहां विवाद उत्पन्न होता है कि वह पवित्र आत्मा के बारे में कह रहा है या परमेश्वर के। जो भी है मुख्य बात स्पष्ट है कि परमेश्वर बाहरी दिखावे का विषय नहीं है। यही बात संपूर्ण धर्मशास्त्र में विहित है।

मैं आपको दो उदाहरण देता हूं: इस पद को सामूहिक आराधना के लिए मन में उतार लें। यीशु धर्मगुरुओं से कह रहा है और हम देखते हैं कि वह अत्यधिक गंभीर है।

हमने अब तक यीशु के जितने भी संदर्भ देखे हैं सब गंभीर बातें हैं। देखिए मत्ती अध्याय 15 पद 7, "हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय मे यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है: 'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।'" आप यहां संकट की बात देख रहे हैं?
हम आराधना में गाने गाते हैं। हम होठों से उसका सम्मान उच्चारित कर रहे हैं परन्तु हमारे मन उससे दूर होते हैं। यीशु इसके विरुद्ध चेतावनी देता है। उसने कहा, "यह मेरी उपस्थिति और तुम्हारे मन की प्रतिक्रिया है।" अब क्या यह बात केवल यीशु कहता है? इफिसियों को लिखे पौलुस के पत्र में देखें अध्याय 5 और पद 18 जहां पौलुस नये नियम की कलीसिया में आराधना की विधि समझाता है। हम समुदाय के अध्ययन में इस पद को पढ़ चुके हैं, "दाखरस से मतवाले ने बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने–अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।" स्तुतिगान तो होठों से ही होगा परन्तु ध्यान दीजिए वह कहता है, "अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।" यह मन की बात है। मसीह की उपस्थिति के प्रति मन का भाव ही सामूहिक आराधना में अन्तर उत्पन्न करता है।

यह हमारे मुंह के शब्द, आराधना विधि, हमारी कुर्सी नहीं, हमारे मन की दशा है जो सामूहिक आराधना को वास्तविक आराधना बनाती है और हम ही जानते हैं कि हमारे मन में क्या हो रहा है। यह अत्यधिक घातक हो सकता है कि हम एकत्र हों और स्वांग रचें। इसके प्रति हमें अत्यधिक सावधान रहना है।

परमेश्वर हमें अर्न्तग्रहण करने में सहायता करे कि सामूहिक आराधना बाहरी दिखावे से परे है। आपके मन के भाव ही सामूहिक आराधना का सार है। यदि हम बाहरी बातों पर ध्यान देते हैं तो हम आत्मिक स्वांग रचते हैं। स्पष्ट है कि हम गहराई तक स्वांग रच रहे हैं।

जब हम कहते हैं कि परमेश्वर हमारे मन में काम कर रहा है तो इसका अर्थ है कि हमारे मन परमेश्वर में केन्द्रित हैं और इस प्रकार हम आराधना के अर्थ की गहराई में पहुंचते हैं। मसीह की उपस्थिति की सत्यता और हमारे मन की उसके प्रति प्रतिक्रिया। और जब मैं कहता हूं, "हमारे मन की प्रतिक्रिया" तो मैं आपको निरुत्साह नहीं करता परन्तु आवश्यक नहीं कि आपमें जलता हुआ जोश हो या उफनता हुआ मनोवेग हो। यह होना अच्छा है परन्तु सदैव ही आराधना में ऐसा नहीं होता। संभवतः हम परमेश्वर के साथ अपने संबन्धों में प्रयासरत हैं, तथापि हमें अपने मन उसमें केन्द्रित करके कहना है, "प्रभु तू जानता है कि मेरा मनोवेग इस समय अति प्रबल नहीं है।" आराधना तो यही है कि अपना मन परमेश्वर में लगाएं और कहें, "हे परमेश्वर मेरी लालसा बढ़ा।"

आराधना में यह कहना भी है, "हे परमेश्वर, मैं एकाग्रता से बाहर हूं। मैं अपने जीवन में तेरे कार्यों से उलझन में हूं। मैं समझ नहीं पा रहा हूं।" तथापि ऐसी स्थिति में भी अपना मन परमेश्वर में केन्द्रित करें। मैं तो कहूंगा कि ऐसे पलों में ही आराधना गहराई में होती है। कभी–कभी जब हमारा मनोवेग वश से बाहर होता है तब आराधना बाहरी बातों तक ही सीमित नहीं रहती है, स्थान तक ही सीमित नहीं रहती है। वह अन्तर्वासी मसीह की उपस्थिति की प्रतिक्रिया बन जाती है। आत्मिक ढोंगी आराधना को निश्चित स्थान तक ही सीमित रखते हैं।

तीसरा गुणः आत्मिक ढोंगी अनजान परमेश्वर की आराधना करते हैं। यूहन्ना अध्याय 4 पद 22 में यीशु कहता है, "तुम जिसे नहीं जानते उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।" यहां यीशु कहता है कि सामरियों ने पुराने नियम का अधिकांश भाग अनदेखा किया था। उसके कहने का अर्थ था, "तुम केवल उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक ही सीमित रहे जबकि मेरा स्वर्गीय पिता तब से अब तक बहुत कुछ कर चुका है। तुमने वह सब–इतिहास की पुस्तकें–अनदेखा किया।" भजनसंहिता, भविष्यद्वक्ता आदि सब से चूक गए।

वह कहता है कि उद्धार यहूदियों से है। कहने का अर्थ यह है कि "पंचग्रन्थ ही नहीं संपूर्ण पुराना नियम मसीह की ओर संकेत करता है और यरूशलेम इसका केन्द्र है कि वह नया इस्राएल सिय्योन होगा पुराने नियम का संपूर्ण परिदृश्य।"

वे यह समझ लेते परन्तु उन्होंने उसके वचन को अनदेखा किया। मैं फिर कहता हूं कि हम न तो यहूदी हैं और न सामरी कि इस विषय पर विवाद करें परन्तु हमे निश्चय ही यह स्वीकार करना है कि परमेश्वर के वचन से वियुक्त आराधना निस्सार है।

जब हम आराधना में एकत्र हों और मसीह के अनुयायी होने के कारण वचन हमारे जीवन का केन्द्र न हों, पूरे सप्ताह हमारे जीवन का केन्द्र न रहा हो तो चाहे हम कितने भी गाने गाएं कितने भी वचन हमारे सामने आएं हमारी आराधना निस्सार है क्योंकि हमें परमेश्वर का व्यक्तिगत अनुभव नहीं है।

मैं बार–बार "संकट" शब्द का प्रयोग कर रहा हूं क्योंकि इसमें संकट ही है। संसार में हर एक मनुष्य आराधक हैं वह किसी न किसी की आराधना करता है। अतः प्रश्न यह नहीं कि आप आराधना करते हैं। प्रश्न यह है, "आप किसकी आराधना करते हैं?" यदि हम वचन के द्वारा परमेश्वर का व्यक्तिगत ज्ञान ग्रहण नहीं करते तो हम में और संसार के मूर्तिपूजकों में क्या अन्तर है? आप कहेंगे, "आपके कहने का अर्थ क्या है? मैं मूर्ति पूजा नहीं करता।" मूर्ति क्या है? मूर्ति वह है जिसे हम बनाते हैं और ईश्वर करके मानते हैं। हमने कितनी बार आराधना में सुना है या कहा है– तो निन्दनीय बातें हैं– "मैं परमेश्वर के बारे में सोचता हूं तो मैं यह सोचता हूं। परमेश्वर के विषय में मेरी कल्पना यह है।"

परमेश्वर को निर्धारित करने का अधिकार हमें नहीं है। परमेश्वर ने अपने आपको हम पर प्रकट किया है। हमारा उत्तरदायित्व है कि उसके वचन को अन्तर्ग्रहण करें, उसे कंठस्थ करें उसका अध्ययन करें, उसे अपने जीवन का वास्तविक अंग बना लें और हम उसमें जितनी अधिक गहराई प्राप्त करेंगे उतनी ही अधिक हमारी आराधना वास्तविक होगी। हम अंधी आराधना नहीं करेंगे। हमारी आराधना गाने गाते हुए निस्सार नहीं होगी। हमें प्रत्यक्ष परमेश्वर का व्यक्तिगत ज्ञान प्राप्त होगा और परिणामस्वरूप हमारी सामूहिक आराधना में परिवर्तन आ जाएगा।

सच्चाई और आत्मा! सच्चाई हमें आराधना के लिए मुक्त करती है। वह हमें नई ऊंचाइयों में, नई गहराईयों में, नई लम्बाई, नई चौड़ाई में ले जाती है क्योंकि हम परमेश्वर को जानने लगते हैं और उस परमेश्वर की

आराधना करते हैं जिसे हम जानते हैं। अब यदि हमने वचन में समय नहीं लगाया और हमारी आराधना सफल नहीं हो रही है तो अचम्भित न हों। क्योंकि आप किसी ऐसे की स्तुति कर रहे हैं जिसे आप नहीं जानते।

आत्मा और सच्चाई कैसे साथ साथ चलते हैं? यह आत्मा या सच्चाई नहीं है। यूहन्ना अध्याय 4 में यीशु ने जो कहा वह है, "आत्मा और सच्चाई में आराधना करेंगे।" अब यदि आपके पास सच्चाई अर्थात वचन है और वह मन नहीं है जिसकी अभी हमने चर्चा की कि वह मसीह में केन्द्रित हो तो केवल वचन हमें लड़नेवाला बनाता है। यदि हमारे पास केवल वचन होगा तो हम वादविवाद करने लगेंगे जैसा एक लम्बे समय से कलीसिया में होता आ रहा है। परिणामस्वरूप नई नई कलीसियाएं स्थापित होने लगेंगी क्योंकि वचन ने हमें आत्म केन्द्रित बना दिया है। आत्मा बिना वचन हमें विवादी बनाता है।

दूसरी ओर वचन से रहित आत्मा या मन हमें भावनाओं का दास बनाता है। मैं किसी व्यक्ति विशेष या किसी प्रचलित आराधना विधि की अलोचना नहीं कर रहा हूं।

तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। जब हम वचन को जानेंगे और साथ ही हम में प्रभु केन्द्रित मन होगा तब हम आत्मिक आवेश से और ऊपरी भावनाओं से बचेंगे और अपनी आराधना को परमेश्वर के वचन के ठोस आधार पर स्थिर रखेंगे। यह आधार कभी नहीं टूटेगी। अतः इन दोनों गुणों को संयोजित करके हम व्यक्तिगत परमेश्वर की आराधना करेंगे।

हमें आज कलीसिया में प्रचलित बाइबल ज्ञान के बारे में परमेश्वर के समक्ष सत्यनिष्ठ बनना है। हमें हमारे आराधना के आधार परमेश्वर को भी जानना है। आत्मिक ढोंगी परमेश्वर को नहीं जानते। वे इसी में सन्तुष्ट रहते हैं।

अन्त में, आत्मिक ढोंगी आराधना को स्थगित करते हैं। "मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीस्त कहलाता है, आनेवाला है। जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि यह स्त्री विश्वासी थी और वह जानती थी कि एक दिन मसीह आएगा। यह उसका अन्तिम प्रयास था कि वार्तालाप से बच निकले।

मुझे ऐसा लगता है कि वह सोच रही होगी, "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं ने यीशु से यह कहा! और मैं इतिहास में दर्ज हो गई कि मैं ने ऐसा कहा था, 'मैं जानती हूं कि ख्रीस्त जो मसीह कहलाता है, आनेवाला है, जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूं वही हूं।"

इस पद की सुन्दरता अनुवाद में नहीं आई है। मूल भाषा में "वहीं हूं" वास्तव में है, "मैं हूं।"

संपूर्ण यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु को "मैं हूं" प्रकट किया गया है। यूहन्ना अध्याय 8 पद 58, "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं।" जीवन की रोटी मैं हूं। पुनरूत्थान मैं हूं। मार्ग, सत्य और जीवन, "मैं हूं।" ये सब "मैं हूं" के तथ्य हैं। यीशु "मैं हूं" है। वह परमेश्वर है। वही आराधना स्थल है। अतः आप आराधना को स्थगित नहीं कर सकते हैं। आराधना कभी भी की जा सकती है।

आत्मिक ढोंगी हर सप्ताह आराधना में जाते हैं परन्तु यह कहकर संतोष करते हैं, "मैं परमेश्वर के साथ बाद में सत्यनिष्ठा निभाऊंगा। मैं वचन को बाद में समझूंगा। इस समय तो मेरे जीवन में अनेक अन्य बाते हैं। मैं अभी इसके लिए तैयार नहीं हूं। मैं अभी इस स्थिति में नहीं हूं। मुझे इसके लिए सक्षम होना होगा।" आत्मिक ढोंगी सच्ची आराधना को स्थगित करते हैं।

इस अध्याय की सुन्दरता यह है कि वह स्त्री समझ जाती है कि उसके सामने कौन खड़ा है और उसे दो सच्चाइयों का बोध होता है।

पहला, यीशु उसे अनन्त संतोष प्रदान करने आया है।

अध्याय के आरंभी में व्यक्त जीवन जल का परिदृश्य अब स्पष्ट होने लगा है। तेरे कहने का अर्थ है कि वह जल यह पानी नहीं है? तू मेरी आत्मा को तृप्ती प्रदान करना चाहता है। अब वह क्या करती है? पद 28 में व्यक्त है, "तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई और लोगों से कहने लगी, 'आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?' अतः वे नगर से निकल कर उसके पास आने लगे।"

यहां वह सबको सुना रही है कि यीशु कौन है। अब पद 39 में, "उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; क्योंकि उसने यह गवाही दी थीः 'उसने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया।'"

सामरियों ने उससे निवेदन किया कि वह उनके साथ ठहर जाए। अतः वह दो दिन वहां रूका और उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोगों ने विश्वास किया और उस स्त्री से कहा, "अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।" क्या आप परिदृश्य समझ रहे हैं?

एक अति अयोग्य स्त्री जो समाज से बहिष्कृत है, जो व्यभिचारिणी है, पानी भरने आती है। यीशु उसके पास आकर कहता है, "मेरे पास तेरे लिए जीवन जल है। मैं तेरी आत्मा को संतोष प्रदान करना चाहता हूं।"

उस स्त्री की आत्मा ही संतोष नहीं पाती है, वह संपूर्ण नगर के लिए जीवन का सोता बन जाती है। परमेश्वर की स्तुति हो कि वह हमारे पाप और दुःख में ही आकर हमसे भेंट करता है। वह हमारी आवश्यकता को ही स्पर्श करता है और हमारे पाप ढांकता है, दुःखों में हमें सामर्थ्य प्रदान करता है और हमें ऐसा संतोष प्रदान करता है जिसका कभी अन्त न होगा और वह हमें मनुष्यों के लिए जीवन का सोता बना देता है।

यह सामूहिक आराधना का परिदृश्य है। यीशु हमें अनन्त संतोष प्रदान करना चाहता है। आप इसे क्यों स्थगित करना चाहते हैं? जब वह आपके सामने है तो आप क्यों आनेवाले समय की प्रतीक्षा करते हैं। आराधना परमेश्वर के प्रति तार्किक प्रतिक्रिया है कि वह कौन है।

यह बाध्य करनेवाली बात नहीं है। यह हमारी अनिवार्यता है। यह हमारी लालसा है। यीशु हमें अनन्त संतोष प्रदान करने ही नहीं आया परन्तु पिता परमेश्वर ने हमें स्वयं खोजने का निर्णय लिया।

सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई में करेंगे। क्यों? क्योंकि पिता ऐसे ही आराधकों को खोजता है। मैं चाहता हूं कि यह आपके मन में बस जाए।

यदि आपके जीवन में आत्मिक स्वांग का कोई प्रमाण है, यदि आपने पाप और दुःखों को दबा रखा है और परमेश्वर के समक्ष सत्यनिष्ठ नहीं ठहरे हैं– कुछ ही समय या लम्बे समय से, यदि आप बाहरी दिखावे में ऐसे मग्न हुए हैं कि आपके मन में कुछ और होठों पर कुछ और है, यदि आप वचन और उसकी घनिष्ठता से दूर हैं कि आपकी आराधना निस्सार हो जाती है, यदि आप इन प्रश्नों को टालते आ रहे हैं या पहली बार सुन रहे हैं तो मैं आपको बता देना चाहता हूं कि पिता परमेश्वर ने आपकी खोज को त्यागा नहीं है।

उसने आपको अकेला नहीं छोड़ा है कि स्वयं ही समाधान खोजें। वह आपके पास आ गया है। उसने एक यहूदी से अधिक सीमा पार की है। उसने हर एक बाधा को पार किया और वह आपके पास आया है। उसने आपको खोजा है, और किसी को नहीं। वह आपको अनन्त संतोष प्रदान करना चाहता है कि आप सच्चे आराधक हों। तो क्या आप स्वांग रचना बन्द करने को तैयार हैं? क्या आप उसके साथ सत्यनिष्ठा निभाने को और सच्ची आराधना को जीवन में वास्तविकता बनाने को तैयार हैं– धोखारहित?

अब कुछ पल मैं आपको अवसर देना चाहता हूं कि आप हमारे चर्चा विषय– आत्मिक स्वांग नहीं– और आपके मन के विचार पर मनन करें।

कभी कभी बाहरी दिखावा हमारे मन को भी प्रकट करता है। यदि आप पाप को थामे बैठे हैं या उससे संघर्षरत हैं– हाल ही में या पहले से– और उसे बाहर निकालना नहीं चाहते हैं तो मैं आपको बता देना चाहता हूं कि वह परमेश्वर से छिपा नहीं है। वह सब देखता है वह सब जानता है। और मनोहर बात तो यह है कि वह उसे अपने अनुग्रह से ढांकना चाहता है। अब चाहे यह पहली बार हो कि आप यीशु से कहें, "मेरे पाप ढांक दे।" या बहुत समय बाद आज कहेंगे तो मैं आपको आमंत्रित करता हूं कि आप अवश्य कहें, "यह मेरी और मन की दशा है जो मैं तेरे सामने रखता हूं। मुझे तेरे क्षमादान की आवश्यकता है, तेरे सामर्थ्य की आवश्यकता है कि मेरे जीवन में पाप पर, इन पापों पर जय पाऊं।"

मैं जानता हूं कि आप के जीवन में अनेक संघर्ष हैं, दुःख हैं, अन्धकार हैं जिससे आप गुज़र रहे हैं, संभवतः आपके विवाहित जीवन में, परिवार में, आपके स्वास्थ में, आत्मिकता में। मैं आपको आमंत्रित करता हूं कि इसे बाहर छोड़कार नहीं, साथ लेकर सामूहिक आराधना में आएं। मैं आपको आमंत्रित करता हूं कि इसे परमेश्वर के समक्ष ले आएं जो कहता है, "अपनी चिन्ताएं मुझ पर डाल दे और देख मैं तेरी सुधि लेता हूं।" मैं आपको अवसर देना चाहता हूं कि आप परमेश्वर पर सब डाल दें और उससे कहें, "हे परमेश्वर यह मेरे

वश में नहीं। तुझे मेरे लिए यह करना होगा।" आज जानते हैं कि उसने आप को खोज लिया है और वह आपका यह बोझ उठा लेना चाहता है, आपके स्थान पर इसे उठाना चाहता है।

हे परमेश्वर, मैं प्रार्थना करता हूं कि ये पल मेरे आत्मिक स्वांग से मुक्त हों। प्रभु, हम प्रार्थना करते हैं कि आप हम में आत्मिक सत्यनिष्ठा उत्पन्न करें और मेरी प्रार्थना है कि आप पापों को यीशु के लहू से ऐसा ढांक दें कि उसकी सीमा न हो और आप मनुष्य को पहली बार, आपमें विश्वास करने और आपकी आराधना करने के लिए आकर्षित करें। अपनी भटकी हुई सन्तान को फिर से अपनी ओर आकर्षित करें। और परमेश्वर मैं उन संघर्षरत मन और जीवनों के लिए प्रार्थना करता हूं जो बोझ से दबे हैं और अन्धकार से गुज़र रहे हैं उनसे आप वहीं भेंट करें और हमारी इस सहभागिता के समय उन्हें सामर्थ्य प्रदान करें और प्रोत्साहित करें। हम आपके समक्ष सत्यनिष्ठा में आते हैं, जैसे हम हैं वैसे ही और अपने आप को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हम में आपकी आराधना हो, यीशु के नाम में आमीन!